International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 149-151

डॉ. शिवप्रसाद सिंह के उपन्यास गली आगे मुड़ती है में काशी का सांस्कृतिक परिवेश

डॉ0 रेनू आनन्द

पी.एच.डी., नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

संस्कृति का मूल अर्थ है साफ या परिष्कृत करना। संस्कृति शब्द का प्रयोग दो अर्थों में किया जाता है, व्यापक अर्थ में तथा संकीर्ण अर्थ में। संस्कृति प्रायः उन गुणों का समुदाय समझी जाती है जो व्यक्तित्व को परिष्कृत एवं समृद्ध बनाते हैं। सामान्य रूप से हम मानव विकास के साथ उसकी श्रेष्ठतम उपलब्धियों को संस्कृति मानते हैं। मनुष्य ने जो आचरण और व्यवहार सीखा, परंपरा द्वारा जिस रहन–सहन, आचार–विचार और मान्यता को ग्रहण किया तथा उसे सामान्य से विशिष्ट बनाया, वहीं संस्कृति बन गयी। डा. भागवत शरण उपाध्याय के अनुसार–'' जिस संस्कार शब्द से संस्कृत शब्द बना है उसका अर्थ है–कच्ची धातु को शुद्ध करना, उसपे लगी मैल को धो–पोंछकर, काट–छांटकर, रगड़ कर पालिश कर चमका देना।''[1] दिनकर के अनुसार''यह ज़िन्दगी का एक तरीका है और यह तरीका सदियों से जमा होकर समाज में छाया रहता है जिसमें हम जन्म लेते हैं। इसीलिए जिस समाज में हम जी रहे हैं, या जिस समाज में हमने जन्म लिया है, उसकी संस्कृति हमारी संस्कृति है। इस दृष्टि से संस्कृति वह चीज़ कही जा सकती है जो हमारे सारे जीवन को व्यापे हुए है तथा जिसकी रचना और विकास में सदियों के अनुभव का हाथ है।''[2]

गली आगे मुड़ती है उपन्यास में काशी का परिवेश संपूर्णता में व्यक्त व्यक्त हुआ है। लेखक का काशी से गहरा जुड़ाव रहा है, इसलिए उसने काशी का समग्र परिवेश प्रमाणिकता के साथ प्रस्तुत किया है। काशी हिन्दुओं का धर्म केन्द्र रहा है। इसलिए लेखक ने वहां की संस्कृति को पृष्ठ भूमि के रूप में स्वीकारा है लेकिन वहां के शिक्षा जगत, युवा असंतोष व आंदोलन, मन्दिर, मन्दिरों में व्याप्त भ्रष्टाचार, साधु–सन्यासी, गंगा के किनारे के घाट और स्त्रियां, उच्च वर्गगीय नैतिकताएं, निम्न वर्ग का होने वाला शोषण, अपराध जगत और धर्म के प्रति आस्था आदि का वर्णन करते हुए, लेखक स्वय यह मानता है कि उसका मुख्य उद्देश्य इस प्राचीन नगर की संस्कृति को बांधना है। इसका संकेत उपन्यास के आरंभ में ही मिल जाता है जब काशी नगर को देखकर रामानंद को लगता है– ''बनारस भी क्या अदा से बसा हुआ शहर है।गंगा को धनुषाकार होना था तो यहीं क्यों हुई और यदि हुई तो उसने अपने सारे मरोड़ को एक शहर में क्यो बदल दिया ? इसे देखकर लगता है जैसे कोई तपस्वी कुमारी अपनी बलखाती कमर पर संस्कृति का कलश धरे चली जा रही है। हाय यह छत्राकार ज्योति कितनी शाश्वत और अमर है।''[3]

डा. विवेकी राय के अनुसार इसमें व्यक्त संस्कृति युवा आक्रोश की पृष्ठभूमि के रूप में आयी है।

गली आगे मुड़ती है में व्यक्त संस्कृति का रूप बहुआयामी है। काशी को उपन्यासकार ने 'कासमोपोलिटन' शहर के रूप में व्यक्त किया है, इसीलिए देश के तमाम भागों से आकर लोग यहां बसे हुए हैं उनके साथ उनकी संस्कृति, उनका आचार व्यवहार और उनकी जीवन शैली भी यहां दिखाई देती है। मुख्य रूप से गुजराती और बंगाली लोगों की प्रधानता दिखाई देती है। उत्तर भारत का शहर होने के नाते स्थानीय संस्कृति के अलावा गुजरात और बंगाल की संस्कृति भी इसमें मिश्रित हुई है। लेकिन संस्कृति के ये विभिन्न रूप एक दूसरे से इस तरह से घुल–मिल गये हैं कि काशी की संस्कृति को किसी एक की संस्कृति नहीं कहा जा सकता बल्कि ये सभी एक होकर काशी के हो गये हैं। इनके मिलाप से संस्कृति का समन्वीय रूप प्रकट हुआ है जो सिर्फ काशी का ही है। भूमिका में लेखक यह स्वीकार करता है कि बनारस जैसे नगर की संस्कृति के प्रति पूरा न्याय करने के लिए उसके अतीत और वर्तमान के साक्षात्कार के लिए सैकड़ों समाजशास्त्रीय, शोध प्रबन्ध और दर्जनों उपन्यासों की अब भी ज़रूरत है।

संस्कृति का स्वरूप इस उपन्यास में सुनियोजित, संतुलित और उद्देश्यपूर्ण ढंग से प्रस्तुत हुआ है। दुर्गा पूजा के समय भाव ज्योति और नृत्य की जो त्रिवेणी यहां बहती है वह अन्यत्र कहीं शायद ही दिखे। बंगालियों का दुर्गा उत्सव, हिन्दी भाषियों की रामलील और गुजरातियों का गरबा उपन्यासकार ने मोहक रूप में प्रस्तुत किया है। बंगाली व गुजराती संस्कृति के लिए क्रमशः गांगुली और नागर परिवारों के साथ–साथ रामानंद के माध्यम से स्थानीय संस्कृति प्रस्तुत की गई है। स्थानीय भोजपुरी संस्कृति जमनादास व हरिमंगल जैसे पात्रों से सम्बन्धित प्रसंगों में भी उजागर होती चलती है। रामानंद का किरण और जयंती के साथ भावनात्मक स्तर पर जुड़ाव उन संस्कृतियों के भीतरी तत्वों को चित्रित करने का माध्यम बन गया है। लाजों के प्रसंग द्वारा लेखक ने निम्नवर्गीय नारी की स्थिति तथा किरण और जयंती के माध्यम से क्रमशः उच्चवर्गीय और मध्यवर्गीय नारी दशा को प्रस्तुत करते हुए संस्कृति के अनेक पहलुओं को प्रकट किया है।

बंगाली संस्कृतिः– बंगाली संस्कृति का सबसे प्रमुख तत्व दुर्गापूजा है जिसे गली आगे मुड़ती है में भी चित्रित किया गया है। इस अवसर पर कलकत्ते के कारीगरों द्वारा बनाई गई दुर्गा की प्रतिमाएं और पूजा स्थल को विशेष बंगला ढंग से सजाया जाना तथा कलश स्थापना का चित्रण किया गया है। कलश के ऊपर दीप जलाने की रीति बंगाल के दुर्गापूजा की खास पहचान है। इन सब के माध्यम से शक्ति की आराधना का वातावरण निर्मित किया जाता है। यह आयोजन भट्टाचार्य के परिवार में होता हुआ चित्रित किया गया है। बंगाली परिवार के खान–पान, रहन–सहन आदि के चित्रण भी रामानंद और जयंती के माध्यम से हुए हैं। ''माछ–भात'' के प्रेमी बंगाली परिवारों में भी कुछ शाकाहारी परिवार होते हैं। जयंती का परिवार ऐसा ही है। बंगाली मिठाईयां दुर्गापूजा के अवसर पर विशेष महत्व रखती हैं। इसी तरह 'तात' के चौड़े बार्डर वाली साड़ी बंगाली संस्कृति की परंपरागत पहचान बन जाती है। गली आगे मुड़ती है में इन सभी सांस्कृतिक तत्वों का चित्रण किया गया है। बंगाली लोकगीतों का भी उल्लेख किया गया है। बाउल गीत की दो पंक्तियां भी अंत में मिलती हैं।

> ना लईको ना लईको। बन्धु कांचन मालार नाम तोमार चरेण आभार शतेक परणाम।

जयंती के माध्यम से खास मध्यवर्गीय लड़कियों की स्थिति का संकेत मिलता है। मां बाप का उनकी गतिविधियों पर कठोर नियंत्रण तथा शादी के सम्बन्ध में लड़की की इच्छा भी न जानना परंपरागत बंगाली परिवार की कुछ ऐसी ही स्थितियां हैं।

गुजराती संस्कृति

गली आगे मुड़ती है में गुजराती संस्कृति नवरात्र की मातृपूजा के रूप में मुख्यतः प्रकट हुई है। गुजराती संस्कृति के अनुसार नवरात्र के अवसर पर घर के अंदर दीपक जलाकर मां की वंदना की जाती है। इस अवसर पर गरबा नृत्य द्वारा मां की वंदना की जाती है गुजराती परिवारों में इस पर्व का विशेष महत्व है। इस उपन्यास में सेठ वल्लभ चन्द्र नागर के यहां यह आयोजन बड़ी धूम–धाम से होता है। रामानंद उनकी बेटी किरण को ट्यूशन पढ़ाता है। रामानंद मंडप निर्माण में नीले के साथ सुनहले या सिंदूरी रंग का मेल करता है जिसे किरण 'सोना मा मरकत' कहती है। यही राधा कृष्ण का भाव रंग है। गरबा के परिक्रमा नृत्य के लिए बने केले के स्वंभों से निर्मित मांडली के चारों तरफ झांड़ियों के वितान से पूरा आंगन सुधमा में बदल जाता है। समान ऊंचाई की बारह लड़कियां सिर पर गरबी धरे मंडप में आती हैं। सबसे आगे किरण रहती है जिसके सिर पर सहस्र छिद्र वाला गरबा रहता है इस अवसर पर मां की वंदना के गीत गाए जाते हैं। यह नृत्य वर्तुलाकार होता है और समाप्ती पर नर्तकी बालाएं कतार में खड़ी होकर सबसे नमस्कार होती हुई नेपतथ्य में चली जाती हैं। इस अवसर पर उपन्यासकार ने 'मेंहदी रंग लाइयों री' जैसे गरबा गीत का उल्लेख किया है। अनेक प्रसंगों के अनुरूप गुजराती समाज में प्रचलित भोजनों का वर्णन भी किया गया है, नागर लोग गुजरात के श्रेष्ठ ब्राम्हण होते हैं।

इनके यहां शंकर की पूजा कुलदेवता के रूप में की जाती है। इन सांस्कृतिक तत्वों के अतिरिक्त लेखक ने उच्चवर्गीय गुजराती परिवार की लड़की की स्थिति को भी चित्रित किया है। पिता अपने व्यापार में व्यस्त रहते हैं और मां बनाव–श्रृंगार में। वात्सल्य के लिए तरसते बच्चों की देख–रेख बूढ़ी दाईयां करती हैं। इस उच्चवर्ग में दूसरे परिवारों के बीच सम्बन्ध भी वैभव प्रदर्शन और प्रतिस्पर्धा के लिए होते हैं। इस दिखावटी और संस्कार विहीन परिवेश में जातीगत कठोरता भी दिखाई देती है। किरण की अंतर्जातीय शादी के छोटी बहन और भाई के विवाह में होने वाली अड़चन को ही मुख्य कठिनाई बताया जाता है। रामानंद से शादी न करने के पक्ष में होने के कारण ही सेठ जी पैसे देकर उसके खान–दान की कमियां खोजवाते हैं। इस तरह गुजराती संस्कृति का भी यथार्थ चित्रण यहां मिलता है।

भोजपुरी संस्कृति

बंगाली और गुजराती संस्कृति को दुर्गापूजा और गरबा के चित्रण द्वारा जिस तरह प्रस्तुत किया गया है उस तरह के किसी पर्व, त्योहार या उत्सव द्वारा भोजपुरी संस्कृति प्रस्तुत करने का प्रयास नहीं हुआ है। जन्माष्टमी, दीपावली, रक्षाबन्धन आदि के उल्लेख हैं किन्तु उनमें सांस्कृतिक तत्वों का आभाव दिखाई देता है। जमनादास, हरिमंगल, रामानंद आदि चरित्रों से सम्बन्धित कथाप्रसंगों में भी कोई ऐसा सांस्कृतिक तत्व प्रमुख रूप से समाहित नहीं किया गया है। गरबा या दुर्गापूजा जैसा कोई प्रबल सांस्कृतिक तत्व है भी नहीं जो कि प्रांत का प्रतिनिधित्व कर सके। लेकिन होली, दशहरा, रामनवमी आदि के चित्रण किए जा सकते थे। भोजपूरी संस्कृति एकरूप निम्नवर्ग के चित्रण द्वारा भी प्रकट होता है। लेखक ने बात–चीत, हाव–भाव और क्षेत्रीय विशिष्टता दिखाने का प्रयत्न अवश्य किया है जैसे जमनादास, रामानंद से पूंछता है कि ''आप को आज तलक ई नहीं लौका कि हमरे भीतर बिहारी संस्कृति है कुछ बूझाता नहीं।''रामानंद स्वीकार करता है कि ''अब बुझाए रहा है पंडित जो खूब लोकता है मुझे कि तुम बात–बात में बबुनी की तरह लजाएं काहे जाते हो।'' यहां की नारियों के चित्रण में भी स्थानीय संस्कृति दिखाई देती है जहां पुरूष प्रधान व्यवस्था अपनी चरम सीमा पर है। इसके अलावा कुछ अंधविश्वास भी प्रकट हुए हैं। सूरी बरमबाबा की फुनगी में नाव बांधकर अपना बुखार भगाना चाहता है। राजो के परिवार वाले भी ओझैइति को ही सभी रोगों की अचूक दवा मानते है। इस तरह भोजपुरी संस्कृति अपनी सारी कमज़ोरियों के साथ प्रकट हुई है।

आधुनिक नगरीय संस्कृति

गली आगे मुड़ती है में समसामयिक युग की आधुनिक संस्कृति भी चित्रित हुई है। जिसमें वह कुछ तो पाश्चात्य संस्कृति की कोरी नकल है और कुछ विभिन्न संस्कृतियों के मेल से बनी एक नई संस्कृति। यह संस्कृति समाज को पतन की ओर ही ले जा रही है। होटल फिलाडेल्फिया में चलने वाला सारा क्रिया–व्यापार इसका उदाहरण है। उत्तेजनात्मक नृत्य, नशीले प्रेम और उच्छृंखलता को छूती पार्टियों के अलावा काल गर्ल्स भी इस संस्कृति के अनिवार्य आयाम हैं। जिस समाज में रामानंद की मां जैसी स्त्रियां है जो पती के द्वारा दूसरी पत्नी रख लेने के बाद भी अपनी मान–मर्यादा और कुल प्रतिष्ठा सहेजती हुई संयमित जीवन बिताती हैं उसी नगरीय समाज में काल गर्ल्स की संस्कृति खुले आम पनपती हैं और इस होटल में आना उच्च सामाजिक स्तर की पहचान माना जाता है लीला खन्ना जैसे चरित्र इसके प्रमाण हैं।

पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव का एक स्वरूप बर्थडे पार्टियों के रूप में भी है। निम्न मध्यवर्गीय परिवार की आरती की बर्थडे पार्टी में आने वाली उसकी सहेलियों की पोशाक भाषा और विचार में सांस्कृतिक पतन साफ–साफ दिखाई देता है। आरती की भटकन के रूप में लेखक ने इसके परिणाम को भी व्यक्त कर दिया है। लड़कियों का सिगरेट पीना या बॉयफ्रेन्ड रखना देखकर ही रामानंद टिप्पणी करता है कि क्या सचमुच हमारे देश की औरतें इतनी खुली और आधुनिक हो गई हैं अथवा इस आधुनिकता को सिर्फ नकली केंचुल की तरह अपने ऊपर चिपकाये ये देशी धामिने मादा कोबरा बनने का स्वांग करती हैं।

काशी की विशिष्ट संस्कृति

बनारस का स्वच्छन्द एवं मनमौजी स्वभाव को व्यक्त करते हुए 'काशी का इतिहास' मे डा. मोतीचन्द्र ने लिखा है– ''बनारस में कहावत है सात बार नौ त्योहार यानी सप्ताह में दिन सात होते हैं पर बनारस मे उनमें नौ त्योहार पड़ते हैं।''[4]

गली आगे मुड़ती है में काशी की विशिष्ट संस्कृति भी चित्रित हुई है। वहां के घाट, शमशान, मंदिर, मूर्तियां, गंगा के साथ–साथ वहां के गुंडे तथा काशी के पंडो का विस्तृत चित्रण यहां की विशिष्ट संस्कृति की पहचान कराता है। तमाम ऐतिहासिक और पौराणिक संदर्भ तथा मंदिरों में पलता भ्रष्टाचार, गंगा में चलती नावें, बाज़ारों की भीड़, रास्ते चलते जेब उड़ाने वाले आदि सभी तत्वों का समावेश करके लेखक ने बनारस की विशिष्ट संस्कृति को ही प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि गली आगे मुड़ती है में संस्कृति के विभिन्न रूप प्रस्तुत हुए हैं लेकिन ये संस्कृतियां समग्र रूप में काशी की संस्कृति का एक अंग बनकर उभरी हैं। लेखक काशी के समग्र परिवेश को उभारना चाहता है और संस्कृति के ये विविध रूप इस प्रयास में पृष्ठभूमि बनकर चित्रित हुए हैं।

निष्कर्ष

गली आगे मुड़ती है उपन्यास का केन्द्र बनारस शहर है, काशी को अपनी समग्रता में पूरी प्रमाणिकता के साथ प्रस्तुत करना लेखक का उद्देश्य रहा है। इसीलिए काशी जैसे धर्म केन्द्र के संपूर्ण परिवेश को उभारने का सार्थक प्रयास उपन्यासकार ने किया है। लेखक ने काशी की असली रंगत और उसके असली रूप को प्रस्तुत करने का अपना इरादा अपने एक साक्षात्कार में भी स्वीकार किया है। इस उपन्यास में आज का बनारस है जो संस्कृतियों की टकराहट से भी धूमिल नहीं हुआ है।शहर के आकार और स्थलों के नाम आदि को पौराणिक ऐतिहासिक संदर्भों के तहत विश्लेषित किया गया है। शहर में पहुंचते ही रामानंद सोचता है कि बनारस भी क्या अदा से बसा हुआ शहर है।

गली आगे मुड़ती है में पीढ़ियों का टकराव और बुद्धजीवियों के क्रिया व्यवहार भी खोखलापन भी स्पष्ट रूप से व्यक्त हुआ है। उनकी कायरता, स्वार्थ परकता, शैक्षिक, धार्मिक और आर्थिक तत्वों को चित्रित करके काशी को उसकी संपूर्णता में प्रस्तुत किया है। ये वे तत्व है जिनसे इस नगर की एक अलग पहचान बन जाती है।

संदर्भ ग्रंथ

1. भगवतशरण उपाध्याय, सांस्कृतिक भारत, पृ0 8
2. रामधारी सिंह दिनकर, हमारी सांस्कृतिक एकता, पृ0 41
3. गली आगे मुड़ती है, डा. शिवप्रसाद सिंह पृ0 185
4. डा. मोतीचन्द्र, काशी का इतिहास पृ0 307